कामदा एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Kamada Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 47, controlling revision 336428. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 47 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 47 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.47.1–39, Sanskrit Wikisource revision 336428, not a transcription of the original text.

प्रश्न, नागपुर और दरबार की त्रुटि

KATHA 6.47.1–13

युधिष्ठिर वासुदेव को नमस्कार कर चैत्र शुक्ल एकादशी का नाम पूछते हैं। कृष्ण दिलीप के पूछने पर वसिष्ठ की कही पुरानी शुभ कथा सुनाते हैं। दिलीप नाम जानना चाहते हैं। वसिष्ठ कामदा बताते हैं, जिसे पाप-रूपी ईंधन को जलाने वाली अग्नि और पुण्य देने वाली कहा गया है। यह धार्मिक रूपक है, वास्तविक आग का उपाय नहीं।

सोने और रत्नों से सजे नागपुर में पुण्डरीक के नेतृत्व में शक्तिशाली नाग रहते हैं। नागराज पुण्डरीक की सेवा में गंधर्व, किन्नर और अप्सराएँ हैं। अप्सरा ललिता और गंधर्व ललित प्रेम से जुड़े दम्पति हैं। उनका घर सुन्दर और धन-धान्य से भरा है; एक-दूसरे की छवि दोनों के हृदय में रहती है। कथागत नागपुर को किसी आधुनिक नगर से नहीं जोड़ा गया।

एक बार राजा सभा में हैं और ललित पत्नी के बिना गा रहे हैं। ललिता की याद में उनके पद और अक्षरों का क्रम चूकता है। नाग-प्रधान यह त्रुटि राजा को बताते हैं। चयनित इकाई 12 में कर्कट और 13 में कर्कोटक-वचः है; अंग्रेज़ी तुलना कर्कोटक नाम रखती है। दोनों रूपों को बिना बताए एक नाम में नहीं सुधारा गया और नया तीसरा पात्र भी नहीं बनाया गया। सुनकर राजा की आँखें क्रोध से लाल और स्वभाव भयावह हो जाता है।

Saluting Vasudeva, Yudhishthira asks the name of Chaitra's bright Ekadashi. Krishna recounts the auspicious old account Vashishtha told when Dilipa asked. Dilipa seeks its name; Vashishtha identifies Kamada, praised as fire consuming the fuel of wrongdoing and bringing merit. This is a religious metaphor, not a practice involving actual fire.

Powerful Nagas led by Pundarika live in gold-and-jewel-adorned Nagapura. Gandharvas, Kinnaras and apsaras serve the Naga king. Lalita the apsara and Lalit the Gandharva are a loving couple. Their beautiful home holds wealth and grain, and each carries the other's image in the heart. Narrative Nagapura is not identified with a modern city.

One day Lalit sings before the king's assembly without his wife. Remembering Lalita, he falters in arranging syllables and words. A Naga leader reports the error. Selected unit 12 reads Karkata and unit 13 Karkotaka-vachah; the English comparison uses Karkotaka. The two forms are not silently normalised or made into a third invented character. Hearing this, the king's eyes redden with anger and he becomes fearsome.

शाप, वन और करुणामय ऋषि

KATHA 6.47.14–27

राजा ललित को पत्नी के प्रेम में विचलित होकर दरबार में गाने के लिए कठोर शब्द कहते हैं और मांस तथा मनुष्य खाने वाला राक्षस होने का शाप देते हैं। कथा में उनका भयावह रूप बनता है: विकृत आँखें, एक योजन तक फैली बाँहें, गुफा जैसा मुख, सूर्य-चन्द्र जैसे नेत्र, पर्वत जैसी गर्दन और खोखली नासिका। होंठ एक योजन और शरीर आठ योजन ऊँचा बताया गया है। ये पौराणिक आकार हैं, आधुनिक माप या शरीर की भिन्नता को बुराई से जोड़ने का नियम नहीं।

ललिता दुखी होकर सोचती हैं कि क्या करें, कहाँ जाएँ; पति शाप से पीड़ित हैं और उन्हें मन का सुख नहीं मिलता। दोनों घने, दुर्गम वन में जाते हैं। मनचाहा रूप लेने वाला राक्षस क्रूर आचरण और मनुष्य-भक्षण में लगा भटकता है, दिन-रात सुख नहीं पाता। ललिता रोते हुए साथ चलती हैं। हिंसा का वर्णन कथा का है; किसी पत्नी पर असुरक्षित संबंध में रहने या दूसरे के आचरण का भार उठाने का दायित्व नहीं।

सुन्दर आश्रम और शान्त स्वरूप ऋषि देखकर ललिता जल्दी उनके पास जाती हैं, नमस्कार करके खड़ी होती हैं। करुणामय ऋषि पूछते हैं कि वह कौन हैं और क्यों आई हैं। वह स्वयं को गंधर्व वीरधन्वा की पुत्री ललिता बताती हैं; पति के भयावह राक्षस-रूप और बुरे आचरण से दुखी होकर उनके लिए सहायता चाहती हैं। चयनित अध्याय ऋषि का नाम या आश्रम का पर्वत नहीं देता; ऋष्यशृंग या विन्ध्य का नाम इसमें नहीं जोड़ा गया।

The king reproaches Lalit for singing at court while distracted by love for his wife and curses him to become a rakshasa consuming flesh and people. The story gives him a frightening form: altered eyes, arms spanning a yojana, a cavern-like mouth, eyes like sun and moon, a mountain-like neck and hollow nostrils. His lips measure one yojana and his body rises eight yojanas. These are mythic dimensions, not modern measurements or a rule associating bodily difference with evil.

Grieving, Lalita wonders what to do and where to go; her husband suffers under the curse and she cannot find peace. They enter dense, difficult forest. The shape-changing rakshasa wanders cruelly, doing wrong and consuming people, finding no comfort by day or night. Lalita accompanies him in tears. Narrative violence does not make a wife responsible for remaining in an unsafe relationship or carrying another's conduct.

Seeing a beautiful hermitage and a peaceful sage, she approaches quickly, salutes and stands before him. Compassionately, he asks who she is and why she has come. Identifying herself as Lalita, daughter of the Gandharva Veeradhanva, she seeks help for her husband, distressed by his frightening form and wrongdoing. The selected chapter gives neither the sage's name nor a mountain location; no Rishyashringa or Vindhya identification is added.

पुण्य का समर्पण और पूरा फल-वचन

KATHA 6.47.28–39

ललिता ऋषि से अभी क्या करना चाहिए, इसका मार्गदर्शन माँगती हैं। संस्कृत इकाई 28 में उनके प्रश्न के साथ मेरे बताए व्रत को करो का निर्देश भी है, जबकि ऋषिरुवाच 29 से शुरू होता है और निर्देश 30 में

फिर आता है। यह मिश्रित वक्ता-सीमा और दोहराव बताया गया है, चुपचाप नया संवाद-क्रम नहीं बनाया गया। ऋषि कहते हैं कि अभी चैत्र शुक्ल पक्ष है; पाप-नाश की प्रशंसा वाली कामदा का व्रत करके उसका पुण्य पति को दें। कथा में उससे शाप-दोष तत्काल दूर होगा। ललिता यह सुनकर प्रसन्न होती हैं।

ललिता एकादशी का व्रत करती हैं। द्वादशी को विप्र के समीप वासुदेव के सामने वह कहती हैं कि उन्होंने कामदा व्रत किया है और उसका पुण्य पति की पिशाचता दूर करे। कथा पहले राक्षस कहती है, लेकिन इकाई 34 में पिशाचता है; शब्द-भिन्नता रखी गई है, नया अलग जीव या निदान नहीं। इकाई 32 का संक्षिप्त वाक्य द्वादशी का उल्लेख करता है; अंग्रेज़ी तुलना दोनों दिन उपवास कहती है। यहाँ उससे अनिवार्य दो-दिन का उपवास या नया पारण-समय नहीं बनाया गया।

ललिता के बोलते ही कथा में पति का पाप और राक्षस-रूप दूर होकर दिव्य रूप तथा गंधर्व-अवस्था लौटते हैं। सोने और रत्नों से सुशोभित दोनों पहले से अधिक सुन्दर रूप में आनंदित होते हैं और श्रेष्ठ विमान पर चढ़ते हैं। विमान पौराणिक वाहन है, ऐतिहासिक हवाई जहाज का दावा नहीं। यहाँ कोई नया गन्तव्य या दूसरा शाप नहीं जोड़ा गया।

वसिष्ठ राजा को लोगों के कल्याण के लिए व्रत ध्यान से करने का आग्रह देते हैं। पूरा समापन ब्रह्महत्या और पिशाचत्व दूर करने की धार्मिक प्रशंसा, तीनों लोकों के चर-अचर में इससे श्रेष्ठ न होने का कथन और पढ़ने-सुनने से वाजपेय यज्ञ जैसा फल कहता है। अलग समापन पद्म महापुराण की पचपन हजार वाली संहिता, उत्तर खंड के उमापति–नारद संवाद में चैत्र शुक्ल कामदा का अध्याय 47 बताता है। बाहरी कृष्ण–युधिष्ठिर और भीतर दिलीप–वसिष्ठ संवाद सहित सभी 39 इकाइयाँ और समापन पूरे हैं।

ये धार्मिक फल-वचन उपचार, धन, इच्छापूर्ति या संबंध सुधरने की गारंटी नहीं। पुण्य-समर्पण का कथागत प्रसंग पत्नी का अनिवार्य कर्तव्य या किसी दूसरे के भाग्य पर नियंत्रण नहीं। हानि की जवाबदेही, भोजन-पानी, सुरक्षित विश्राम और सहायता बनी रहती है। जाति-आधारित निषेध या पिशाच होने का व्यक्तिगत निदान न करें। तिथि जुड़े पृष्ठ पर है; यहाँ नया समय नहीं निकाला गया।

Lalita asks the sage for guidance on what she should now do. Sanskrit unit 28 includes her request alongside an instruction to perform the vow already described, although rishiruvacha starts at 29 and the instruction recurs in 30. This mixed speech boundary and repetition are disclosed rather than silently reordered. The sage says it is Chaitra's bright fortnight: observe Kamada, praised for removing wrongdoing, and dedicate its merit to her husband. Within the account, the curse's fault will disappear immediately. Lalita is pleased.

She observes Ekadashi. On Dwadashi, near a vipra and before Vasudeva, she declares her Kamada observance and asks that its merit remove her husband's pishachata. The story earlier calls his state rakshasa, but unit 34 uses pishachata; the variation remains, without inventing another creature or diagnosis. Unit 32 elliptically mentions Dwadashi; the English comparison describes fasting on both days. No mandatory two-day fast or new parana timing is inferred.

At her words, the account removes his wrongdoing and rakshasa form, restores his divine form and

Gandharva condition. Adorned with gold and jewels, both rejoice with forms more beautiful than before and enter a splendid vimana. This mythic vehicle is not a claim about a historical aeroplane. No extra destination or second curse is added.

For the people's welfare, Vashishtha urges the king to observe attentively. The complete close praises removal of brahmahatya and pishacha status, calls the vow unsurpassed among the moving and unmoving in the three worlds, and compares reading or hearing with the merit of Vajapeya sacrifice. The separate colophon identifies chapter 47 as Chaitra's bright Kamada in the Umapati–Narada dialogue of the Padma Mahapurana's fifty-five-thousand collection, Uttara Khanda. All 39 numbered units and the ending are covered, including the outer Krishna–Yudhishthira and inner Dilipa–Vashishtha dialogues.

These religious benefits guarantee neither treatment, wealth, fulfilled wishes nor repaired relationships. Narrative dedication of merit is not a wife's compulsory duty or control over another person's fate. Accountability for harm, food, water, safe rest and help remain. Do not impose caste exclusions or diagnose a person as a pishacha. The linked hub owns the date; no new timing is calculated here.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Kamada Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.47.1–39, revision 336428, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.